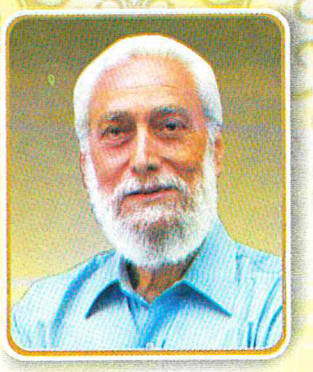


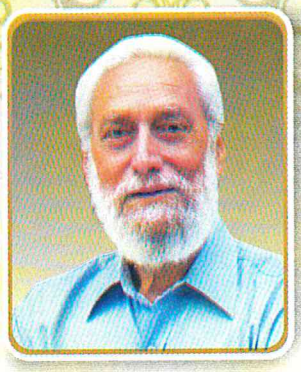
Shri Naresh Bedi

Shri Naresh Bedi is widely recognized as the pioneer in the field of professional wildlife and conservation film making in India. He has dedicated more than forty years of his life to wildlife Filmmaking and continues to do so. In his adventurous career he has been able to record some unseen aspects of wildlife, contributing to the scientific understanding of lndia's natural history.

2. Born on September 10, 1947, Shri Bedi graduated from the Film and Television Institute of India in 1969. Rather than seeking work in the glamorous world of Bollywood, he chose to explore India's wildlife and landscapes that was almost entirely ignored by filmmakers then. In 1970, he teamed up with his younger brother and formed Bedi Films and nurtured it to become one of the leading producers of world class documentaries. Over the years, Bedi Films has produced several films on exciting and difficult subjects like tigers, elephants, wild dogs, red pandas and the Wildlife of Ladakh - all shown on primetime television across the world.

3. Shri Bedi's first subject was the fish-eating gharial - a prehistoric looking crocodilian unique to India. The film 'The Ganges Gharial' revealed aspects of the gharial's behaviour previously unknown to science. In the early eighties he designed a l0 ft high 'Elephant Tripod' to film tigers. It helped him to record for the first time unique sequences of tiger behaviour like a tigress feeding on leopard, nursing cubs of two successive litters and two male tigers mating with one female. In early nineties Shri Bedi spent three years in the inhospitable terrains of Ladakh, battling the extreme cold conditions and came out with two films capturing rare footage of elusive snow leopards, Tibetan wild dogs, Himalayan lynx, and recording the whole breeding biology of bar-head geese for the first time ever. His film on endangered Indian red pandas - 'Cherub of the Mist', shot over two years, uncovers for the first time rarely seen behaviour of red pandas in the wild. Solitary in nature, red panda is one of the most difficult animals to find - let alone film - in its mountainous forest habitat and few Indians even know of its existence.

4. Shri Bedi's exceptional achievements have been rewarded with several national and international recognition. 'The Ganges Gharial' won the prestigious Panda Award (or 'Green Oscar') for best wildlife cinematography at 'Wildscreen', in 1984. Shri Bedi became the first Asian to receive such recognition. The film also won the Silver Medal in the 28th Annual International Film and TV Festival, New York, 1985. 'Saving the Tiger' and 'Man-eating Tigers' both achieved record viewer numbers in the UK and were nominated for a prestigious British Academy of Film and Television Arts (BAFTA) in 1987. ' Saving the Tiger' also won the Eastman Kodak Company award for Outstanding Photographic Achievement. 'The Policing Langur' and 'Cherub of the Mist" won the second and third Panda Award for Bedi Films at Wildscreen in 2005 and 2006 respectively. 'Cherub of the Mist' has also won over a dozen of the most prestigious awards in the US, Canada and Europe. In recognition of Shri Bedi's lifetime achievements and outstanding contribution to environment and wildlife filmmaking the centre for Media Studies conferred their highest award Prithvi Ratna (Jewel of the Earth) endorsed by the United Nations Environment Programme (UNEP) at the Vatavaran Environment & Wildlife Film Festival, 2005. In 2007, the Wildlife Asia Film Festival, Singapore conferred its highest honour, the 'Whale Award', on him for his contribution to environment and wildlife filmmaking in Asia.



श्री नरेश बेदी

श्री नरेश बेदी को भारत में पेशेवर वन्य जीव और वन्य जीव संरक्षण फिल्म निर्माता के रूप में व्यापक रूप में जाना जाता है। आपने अपने जीवन के 40 से अधिक वर्ष वन्य जीव पर फिल्म बनाने के लिए समर्पित कर दिए और अभी भी ऐसी फिल्में बना रहे हैं। रोमांच से भरे अपने कॅरिअॅर में आपने वन्य जीव के कुछ अदृश्य पहलुओं को रिकॉर्ड किया जो भारत के प्राकृतिक इतिहास को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने में अपना योगदान दे रहे हैं।

2. आपका जन्म सितम्बर 10, 1947 को हुआ। आपने भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान से सन् 1969 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। बॉलीवुड के चकाचौंध भरे संसार में काम करने की बजाय आपने भारत के वन्य जीव और प्राकृतिक दृश्यों की खोज करने को तरजीह दी। उस समय फिल्म निर्माताओं द्वारा इसकी पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई थी। सन् 1970 में आपने अपने छोटे भाई के साथ मिल कर बेदी फिल्म्स का गठन किया और इसे विश्व स्तर के वृत्त चित्र बनाने वाले प्रमुख निर्माताओं में से एक बनाया। विगत वर्षों में बेदी फिल्म्स ने बाघ, हाथी, जंगली कुत्तों, लाल पांडा और लद्दाख के वन्य जीव जैसे रोमांचक और कठिन विषयों पर कई फिल्में बनाईं जिन्हें समूचे संसार में प्राइम टाइम टेलीविजन पर दिखाया गया।

3. आपका पहला विषय मछली खाने वाला घडियाल था जो भारत के लिए मगर कालीन प्रागैतिहासिक काल का अजीब सा दिखने वाला जीव है। "द गंगाज घडियाल" फिल्म में घडियाल के व्यवहार के ऐसे पहलुओं को सामने लाया गया है जो पहले विज्ञान के लिए अज्ञात थे। अस्सी के दशक के शुरू में आपने बाघों पर फिल्म बनाने के लिए 10 फीट ऊंचा "एलीफैंट ट्राइपोड" बनाया। इससे आपको बाघ के व्यवहार के अनोखे दृश्यों को पहली बार रिकार्ड करने में मदद मिली। जिसमें बाघिन का तेंदुए को दूध पिलाना, एक के बाद एक हुए दो बच्चों का पोषण करना और दो बाघों का एक बाघिन के साथ मिलन होना शामिल है। नब्बे के दशक के शुरू में तीन वर्ष आपने लद्दाख के प्रतिकूल वातावरण में बिताए जहां आपने अत्यधिक सर्द मौसम का सामना किया और वहां पर आपने पहली बार मुश्किल से दिखाई देने वाले स्नोलेपर्ड, तिब्बती जंगली कुत्तों, हिमालय के बनबिलाव की विरली तस्वीरें खींच कर दो फिल्में बनाईं और बार-हैड हंसिनी की संपूर्ण प्रजनन प्रक्रिया की रिकार्डिंग की। लुप्तप्राय भारतीय लाल पांडा पर बनी 'चेरब ऑव द मिस्ट' फिल्म दो से अधिक वर्ष में बनी जिसमें पहली बार जंगल में लाल पांडा के विरले ही दिखने वाले व्यवहार को फिल्माया गया है। लाल पांडा, जंगल के अपने पहाड़ी पर्यावास में अकेला रहता है और ऐसी स्थिति में इस पर फिल्म बनाना तो दूर, इसे देखना भी मुश्किल होता है और बहुत कम भारतीयों को इसके जीवित होने की जानकारी है।

4. आपकी असाधारण उपलब्धियों को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मान्यताओं से पुरस्कृत किया गया है। सन् 1984 में 'वाइल्डस्क्रीन' में सर्वश्रेष्ठ वाइल्ड लाइफ सिनेमैटोग्राफी के लिए "द गंगाज घडियाल" को प्रतिष्ठित पांडा पुरस्कार (या 'ग्रीन ऑस्कर') प्रदान किया गया। ऐसी मान्यता प्राप्त करने वाले आप पहले एशियाई बने। इस फिल्म को सन् 1985 में 28वें एनुअल इंटरनेशनल फिल्म एंड टीवी फेस्टिवल में रजत पदक भी प्रदान किया गया। 'सेविंग द टाइगर' और 'मैन-ईटिंग टाइगर' दोनों को ही यू के में रिकार्ड संख्या में लोगों ने देखा और इन्हें प्रतिष्ठित ब्रिटिश अकादमी पुरस्कार के लिए सन् 1987 में मनोनीत किया गया। 'सेविंग द टाइगर' को आउटस्टैंडिंग फोटोग्राफिक अचीवमेंट के लिए ईस्टमैन कोडक कंपनी का पुरस्कार भी प्रदान किया गया। 'द पोलिसिंग लंगूर' और 'चेरब ऑव द मिस्ट' ने बेदी फिल्म्स के लिए वाइल्डस्क्रीन में सन् 2005 और 2006 में क्रमश: दूसरा और तीसरा पांडा पुरस्कार जीते। 'चेरब ऑव द मिस्ट' ने यू एस, कनाडा और यूरोप में एक दर्जन से अधिक सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार भी जीते। लाइफटाइम अचीवमेंट और पर्यावरण तथा वन्य जीव पर फिल्म बनाने के आपके उत्कृष्ट योगदान को देखते हुए मीडिया स्टडीज ने वातावरण और वन्य जीव फिल्म समारोह, 2005 में अपने सर्वोच्च पुरस्कार पृथ्वी रत्न (ज्वैल ऑव द अर्थ) से आपको सम्मानित किया जिसे संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा स्वीकृत किया गया है। सन् 2007 में वाइल्डलाइफ एशिया फिल्म फेस्टिवल, सिंगापुर ने एशिया में पर्यावरण और वन्य जीव पर फिल्म बनाने के आपके योगदान के लिए अपने सर्वोच्च सम्मान "ह्वेल अॅवॉर्ड" से आपको सम्मानित किया।